हिंदी दैनिक

UPHIN/2021/89882

नवग्रह टाइम्स

navgrahtimes@gmail.com | facebook.com/Navgrah-Times | @NavgrahTimes

वर्ष: 04 | अंक: 158 | सोमवार, 09 दिसंबर - 2024 (गाजियाबाद) | पेज 8 | मूल्य 3

आनंद सेवा समिति
नवजात बेटियों का सम्मान मेरी पहली प्राथमिकता।
नवजात बेटी पैदा होने पर उसके जन्मोत्सव के लिए संपर्क करें
हर माँ का अभिमान है बेटियां

अध्यक्ष
ममता सिंह
9717919194

साहित्य अकादेमी पुस्तक मेला पुस्तकायन का तीसरा दिन

रविवार के दिन पुस्तक प्रेमियों की उमड़ी भीड़, कवयित्री सम्मिलन एवं गजल संध्या हुई आयोजित

हिंदी गजल का आधुनिकता बोध बेमिसाल है : ज्ञानप्रकाश विवेक

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'पुस्तकायन' पुस्तक मेले का तीसरा दिन कवयित्रियों और ग़ज़लकारों के नाम रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नगाड़ा वादन एवं ओडिसी नृत्य की प्रस्तुतियाँ हुईं। अन्य प्रकाशकों द्वारा भी अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। रविवार की वजह से हर आयु के लोग मेले में भारी संख्या में शिरकत करते नजर आए। 'अस्मिता' नाम से आयोजित कवयित्री सम्मिलन प्रख्यात ओड़िआ लेखिका यशोधारा मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें अंजु रंजन (हिंदी), मालविका जोशी (हिंदी), जोराम यालाम नाबाम (हिंदी), सरोजिनी बेसरा (संताली) एवं ए. सविता सत्यवाणि (तमिल) ने अपनी-अपनी भाषाओं में एवं अनुवाद सहित कविताओं का पाठ किया।

ग़ज़ल संध्या कार्यक्रम ज्ञानप्रकाश विवेक की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें हरेराम समीप, कमलेश भट्ट कमल, ममता पाडु और विज्ञान व्रत ने अपनी ग़ज़लों का पाठ किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में ज्ञानप्रकाश विवेक ने कहा कि वर्तमान हिंदी ग़ज़ल में आधुनिकता बोध अपनी सबसे ऊँचाई पर है जो उसकी बहुत बड़ी उपलब्धि है। उनका एक शेर जो खूब पसंद किया गया वह था लफ्जों पर पर बहुत देर तलक दी उसने, काश एक बार नाम मेरा पुकारा होता। विज्ञान व्रत की पंक्तियाँ थीं ख़्वाहिश एक साथ है मौत भी, वह सिकंदर है तो है। हरेराम समीप ने अद्भुत संचिता से भरी ग़ज़लें सुनाईं। कमलेश भट्ट कमल की पंक्तियाँ थी ख़्वाहिशों की जिंदगी जीने का आता ही नहीं तुमको, कि सुख भी है कई इन कष्टों की दुनिया में। ममता पाडु की पंक्तियाँ थी मुश्किल लाख बुरी हो लेकिन, हमें वहीं रहना होता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत आशा सिंह ने लोक वाद्य नगाड़ा की प्रस्तुति दी और आरुषी मोहंता ने ओडिसी नृत्य में रामाभिषेक और शिवतांडव प्रस्तुत किया। कल सांध्यवेला में एकता के माध्यम के रूप में अनुवाद विषयक परिचर्चा एवं बहुभाषी कविता-पाठ का आयोजन किया जाएगा।

परिचर्चा की अध्यक्षता हरीश त्रिवेदी करेंगे जिसमें रक्षंदा जलील एवं रेखा सेठी अपने विचार रखेंगी। बहुभाषी कविता-पाठ की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि आशुतोष अग्निहोत्री करेंगे, जिसमें असमिया, बाङ्ला, हिंदी, कश्मीरी, तमिल एवं तेलुगु के कवि अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करेंगे।